K. Nand B.A II Hons (Cont)

शीघ्रगुण बढ़ने से उसके साथ ही साथ समयनिष्ठता (Punctuality) का भी शीघ्रगुण बढ़ता है।

कोटि विधि (Ranking method) के भी कुछ गुण (merits) तथा दोष (demerits) हैं। इस विधि के प्रमुख गुण (merits) निम्नांकित हैं।

i) कोटि विधि (Ranking method) में शिक्षक सभी संभावित कोटियों (Ranks) का प्रयोग कर बालकों के व्यवहारों एवं शीलगुणों का आकलन करते हैं। जैसे यदि शिक्षक को 10 छात्रों का श्रेणीकरण (Ranking) करना है यानी उसे 1 से 10 कोटि तक का प्रयोग करना है, तो वह इनमें से प्रत्येक कोटि का प्रयोग कर बालकों के शीलगुणों का अध्ययन करेगा न कि इसमें से मात्र पहला चार कोटियों (Ranks) या अंतिम चार कोटियों का प्रयोग करेगा और बाकी को छोड़ देगा। इससे फायदा यह होता है कि कोटि विधि द्वारा प्राप्त आँकड़ों की विश्वसनीयता (reliability) तथा वैधता (validity) बढ़ जाती है।

) कोटि विधि में केन्द्रीय प्रवृत्ति की त्रुटि (error of central tendency), कठोरता की त्रुटि (error of severity) तथा उदारता की त्रुटि (error of leniency) जैसे मध्यमान त्रुटियाँ अपने आप नियंत्रित रहती हैं क्योंकि शिक्षक को कुछ छात्रों या बालकों को उच्च कोटि कुछ को निम्न कोटि तथा कुछ को मध्य कोटि (middle rank) की श्रेणी में रखना ही पड़ता है।

कोटि विधि में केन्द्रीय प्रवृत्ति की त्रुटि (error of central tendency), कठोरता की त्रुटि error of severity) तथा उदारता की

K. Anand B.A II Hons

साथ ही साथ यह एक खर्चीली प्रविधि भी बताई गई है, इसमें समय अधिक लगने का कारण यह है कि साक्षात्कार प्रायः एक-एक बालक या विद्यार्थी को अलग-अलग बुलाकर किया जाता है। अगर साक्षात्कारकर्ता प्रायः एक-एक बालक या विद्यार्थी का किसी विद्यालय के 500 बालकों का भी साक्षात्कार लेना है, तो जाहिर है कि इसमें समय तथा श्रम बचाने के ख्याल से कभी-कभी शिक्षक या शिक्षा मनोविज्ञानी या साक्षात्कारकर्ता एक साथ कई छात्रों को बैठाकर साक्षात्कार लेना प्रारंभ कर देते हैं, परंतु इसमें कोई सार्थक मतलब सिद्ध नहीं हो पाता है और कोई वैज्ञानिक निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जाता है। इसमें धन भी अधिक खर्च होता है क्योंकि साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता प्रति बालक एक निश्चित राशि या रकम लेता है।

ii) अक्सर देखा गया है कि साक्षात्कारकर्ता हैलो प्रभाव (Halo effect) द्वारा ग्रसित रहते हैं जिससे वे बालकों के शीलगुणों के बारे में एक निश्चित एवं वैज्ञानिक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते हैं। हैलो प्रभाव से तात्पर्य एक प्रकार की ऐसी पूर्वधारणा (Prejudice) या पूर्वाग्रह (baiss) से होता है जिसके आधार पर साक्षात्कारकर्ता द्वारा बालक के व्यवहारों एवं शीलगुणों के बारे में लिया गया निर्णय प्रभावित होता है। उदाहरणार्थ, जब शिक्षक किसी अमुक छात्र के बारे में एक नकारात्मक पूर्वधारणा (Negative Prejudice) बना लेते हैं, तो वे उस छात्र को अक्सर सभी तरह के शीलगुणों एवं व्यवहारों पर नकारात्मक ढंग से (Negatively) ही परखा करते हैं हालाँकि वास्तविकता (reality) इससे

करने में तथा साथ-ही-साथ उनका शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन (educational & vocational guidance) करने में भी काफी करते हैं।

२ शिक्षा मनोविज्ञान में दो प्रकार के साक्षात्कार (interview) का उपयोग किया जाता है — संरचित साक्षात्कार (structured interview) तथा असंरचित साक्षात्कार (unstructured interview)। संरचित साक्षात्कार में शिक्षा मनोवैज्ञानिक पहले से यह निश्चित कर लेते हैं कि शिक्षार्थियों से वे किन-किन प्रश्नों को पूछेंगे और उनके पूछने का ~~शिक्षार्थियों से प्रश्नों को पूछा जाता है।~~ क्रम क्या होगा। सामान्यतः जो क्रम निश्चित किए जाते हैं इसी क्रम में सभी बालकों या शिक्षार्थियों से प्रश्नों को पूछा जाता है। इसका विशेष लाभ यह बताया गया है कि इस तरह के साक्षात्कार में वस्तुनिष्ठता (objectivity) अधिक होती है। तथा साथ-ही-साथ उसमें क्रमबद्धता (systematization) अधिक होता है। असंरचित साक्षात्कार ऐसे साक्षात्कार को कहा जाता है जिसमें साक्षात्कारकर्ता प्रश्नों के स्वरूप (nature) अपने मन से निर्धारित करता है तथा वह कोई एक निश्चित क्रम में प्रश्नों को सभी बालकों से नहीं पूछता है। कुछ बालकों से एक तरह का प्रश्न पूछा जाता है तो कुछ अन्य बालकों से दूसरे तरह का प्रश्न पूछा जाता है फिर प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण कर साक्षात्कारकर्ता बालकों के अभिरुचि, मनोवृत्ति या अन्य शीलगुणों के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है।

शैक्षिक दृष्टिकोण (educational point view) से साक्षात्कार के कई गुण एवं दोष हैं।